

## डॉ. लेस्ली एलन, विलापगीत, सत्र 8, विलापगीत 3: 23-33

© 2024 लेस्ली एलन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. लेस्ली एलन विलाप की पुस्तक पर अपनी शिक्षा देते हुए कह रहे हैं। यह सत्र 8 है, विलाप 3:23-33।

अध्याय 3 में अब तक जो कुछ भी गुरु कह रहे हैं और अध्याय 3 में आगे बढ़ते हुए, यह सब पश्चाताप के लिए प्रार्थना करने के आह्वान की प्रस्तावना है।

पश्चाताप वह मुख्य मानवीय कारक है जिस पर मार्गदर्शक अध्याय 3 में आगे बढ़ने के साथ ही ज़ोर देने जा रहा है। वास्तव में, यह दिखाया जाएगा कि यह परमेश्वर के अनुग्रह में वापस आने का मार्ग है, ताकि व्यक्ति अपने पापों को स्वीकार कर सके और परमेश्वर के साथ फिर से शुरुआत कर सके तथा अनुग्रह के परमेश्वर, विश्वासयोग्य परमेश्वर और करुणा के परमेश्वर को पा सके। शास्त्रों में परमेश्वर द्वारा स्वीकार किए जाने के दो तरीके हैं। एक तरीका भजन 34, भजन 34, और श्लोक 17 से 19 में बताया गया है।

और ध्यान दें कि शब्द क्या हैं। जब धर्मी लोग मदद के लिए पुकारते हैं, तो प्रभु सुनता है और उन्हें उनकी सभी परेशानियों से बचाता है। प्रभु टूटे हुए दिल वालों के करीब रहता है और कुचले हुए मन वालों को बचाता है।

क्या आपने देखा कि इसकी शुरुआत कैसे होती है? धर्मी, धर्मी। और फिर अच्छा जीवन जीने का आह्वान होता है। फिर आपको ईश्वर से स्वीकृति मिलेगी, और फिर आप पाएंगे कि ईश्वर आपको आपके रास्ते में आने वाली किसी भी परेशानी से बचाता है।

हम इसे ईश्वर द्वारा स्वीकृति का मुख्य द्वार कह सकते हैं। मुख्य द्वार में प्रवेश अच्छे आचरण से होता है जब कोई आस्तिक जिम्मेदारी से जीवन जीता है। लेकिन यह हमेशा काम नहीं करता।

एक पिछला दरवाज़ा है। पिछला दरवाज़ा उन विश्वासियों द्वारा इस्तेमाल किया जाता है जो बुरे विवेक का सामना कर रहे हैं और अपनी कमियों को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। वास्तव में, निर्गमन 34, 6, अगर हम इसके संदर्भ के संदर्भ में इसके बारे में सोचते हैं, तो यह वर्णन करता है कि हम परमेश्वर के पास आपातकालीन दृष्टिकोण क्या कह सकते हैं जब सामने का दरवाज़ा पूरी तरह से बंद हो, और उस सामने के दरवाज़े से गुज़रने का कोई रास्ता नहीं है, परमेश्वर के साथ और परमेश्वर के आशीर्वाद और संकट से परमेश्वर के उद्धार के अनुरूप होने का।

और इसलिए, जो विश्वासी पश्चाताप की प्रार्थना कर रहे हैं, वे पिछले दरवाज़े का इस्तेमाल कर रहे हैं। लेकिन इसके विपरीत, यह केवल दूसरी संभावना है, और अधिक आदर्श संभावना सामने के दरवाज़े से जाना है। और वास्तव में, यूहन्ना का पहला पत्र दोनों संभावनाओं की बात करता है।

अध्याय 1 में पिछले दरवाज़े के बारे में बताया गया है। अगर हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, 1 यूहन्ना 1 की आयत 9, अगर हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो वह जो विश्वासयोग्य और धर्मी है, हमारे पापों को क्षमा करेगा और हमें सभी अधर्म से शुद्ध करेगा। यह पिछले दरवाज़े का दृष्टिकोण है। लेकिन फिर, अध्याय 5 में, वह सामने के दरवाज़े के बारे में बात करता है।

प्रेरित यूहन्ना सामने के दरवाज़े के बारे में बात करता है। परमेश्वर का प्रेम यह है, पद 3, कि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करें और उसकी आज्ञाएँ बोझिल नहीं हैं। वह कहता है कि इससे हम जानते हैं कि हम परमेश्वर की संतानों से प्रेम करते हैं जब हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं।

यह सामने के दरवाज़े का दृष्टिकोण है। जब हम ऐसी स्थिति में होते हैं तो परमेश्वर हमें स्वीकार करता है। लेकिन विश्वासियों, हमें न केवल अध्याय 5 बल्कि अध्याय 1, सामने के दरवाज़े और खुले दरवाज़े, सामने के दरवाज़े और पीछे के दरवाज़े की भी आवश्यकता है।

लेकिन बहुत कुछ ऐसा है जो पिछले दरवाज़े से आ रहा है। लेकिन सौभाग्य से, पिछले दरवाज़े से भी रास्ता है। सौभाग्य से, आगे बढ़ने का एक रास्ता है।

और विलापगीत इसी के बारे में बात कर रहा है। वास्तव में, एक कोरस है जिसे मैं किशोरावस्था में चर्च में युवा लोगों की बैठक में गाता था। पाप के अंधेरे रास्तों से भगवान के पास वापस जाने का एक रास्ता है।

एक दरवाज़ा खुला है, और आप अंदर जा सकते हैं। जब आप यीशु के पास एक पापी के रूप में आते हैं, तो कलवरी का क्रॉस वह जगह है जहाँ से आप शुरू करते हैं। और यह पिछले दरवाज़े का ईसाई संस्करण है।

और यह न केवल एक मसीही बनने पर लागू होता है, बल्कि तब भी जब हम मसीही हैं, जैसा कि 1 यूहन्ना 1 में बताया गया है। हमने देखा कि उत्तरजीविता पर यह जोर दिया गया था कि पद 39 मण्डली पर लागू होने जा रहा है। और पूरे रास्ते में, जब वह अपनी स्थिति के बारे में बात करता है तो गुरु मण्डली को ध्यान में रखता है।

और वह कहना चाहता है, मेरी तरह, आपको भी यह स्वीकार करना होगा कि आपको अपने पापों के लिए दंडित किया जा रहा है। और जो कोई भी साँस लेता है, जो जीवित है, उसे अपने पापों की सज़ा के बारे में शिकायत क्यों करनी चाहिए? और मुझे यह महसूस करना पड़ा कि मेरे पापों को दंडित किया जा रहा था, और यह उसका परिणाम था। लेकिन आइए अब श्लोक 23 में सर्वनाम स्विकार का उल्लेख करें, आपकी वफ़ादारी महान है।

ईश्वर के बारे में तीसरे व्यक्ति के इन संदर्भों के बाद, अचानक एक भावनात्मक बदलाव होता है, और गुरु को सीधे ईश्वर की ओर मुड़ने के लिए प्रेरित किया जाता है। भजन 23 में एक समानांतर, कम से कम कुछ समान, एक जैसा नहीं है। और यहाँ भी, यह अक्सर ध्यान में नहीं आता है।

प्रभु मेरा चरवाहा है। वह मुझे सही रास्ते पर ले जाता है। यह तीसरे व्यक्ति में चलता है।

लेकिन फिर, पद 2 में, चाहे मैं सबसे अंधेरी घाटी से गुज़रूं, मैं किसी बुराई से नहीं डरता क्योंकि तू मेरे साथ है। तेरी छड़ी और तेरी लाठी मुझे सुकून देती है। और यह इसी तरह चलता रहता है।

लेकिन श्लोक 4 में अचानक एक बदलाव आता है, और हमें आश्चर्य होता है कि यह बदलाव क्यों आता है। जब मैं भजन 23 पर उपदेश देता हूँ, तो मुझे एक छोटे लड़के का उदाहरण देना पसंद है जिसने चलना सीख लिया है। वह चल सकता है, और वह अपनी माँ के साथ बाहर जाता है। वह अब उसका हाथ पकड़ सकता है। वह आगे चल सकता है और अपनी माँ को कुछ दूर पीछे देख सकता है, और वह सुरक्षित महसूस करता है। लेकिन फिर अचानक, वह एक बड़े कुत्ते को अपनी ओर आते हुए देखता है।

यह पट्टे पर है, इसलिए शायद यह उसे चोट नहीं पहुँचाएगा, लेकिन हो सकता है कि यह उसे चोट पहुँचाए। लेकिन वह उस बड़े कुत्ते से डरता है, और वह वापस जाता है और अपनी माँ के आने का इंतज़ार करता है, और वह अपना हाथ अपनी माँ के हाथ में रखता है। और वह अपनी माँ की ओर सीधे मुड़ता है कि उसे चिंता के उस संदर्भ में उस माँ की ज़रूरत है।

तो, वहाँ वह स्विच है। लेकिन यह स्विच प्रेरणा में थोड़ा अलग है। विलाप 3.23 में, आपकी वफ़ादारी महान है।

यह कृतज्ञतापूर्ण प्रशंसा है। यह परमेश्वर की ओर मुड़ना और कहना है, परमेश्वर आपका धन्यवाद। परमेश्वर आपका धन्यवाद।

लेकिन दोनों ही मामलों में, प्रार्थना की शैली में बदलाव होता है। तो अब, आइए श्लोक 24 पर चलते हैं। मेरा मन कहता है, प्रभु मेरा भाग है, इसलिए मैं उस पर आशा रखूँगा।

और यह कुछ ऐसा है जो पुराने नियम में कई जगहों पर दिखाई देता है, और हमें यह समझना होगा कि, मूल रूप से, यह गिनती की एक आयत और गिनती की पुस्तक की एक स्थिति से जुड़ा है। गिनती अध्याय 18 और आयत 20। वह स्थिति उस समय की है जब इस्राएली उस देश में आए थे।

11 जनजातियों को आश्चस्त किया जा सकता है कि उनके पास अपनी फसलों के लिए भूमि होगी, और इसलिए भोजन सुनिश्चित होगा। लेकिन लेवी जनजाति के लिए नहीं। लेवी जनजाति के लिए नहीं।

उन्हें कोई ज़मीन नहीं दी गई है। वे किसान नहीं बनने जा रहे हैं। उनका सारा समय अभयारण्य को व्यवस्थित करने और वहाँ ज़िम्मेदारी निभाने में ही बीत जाएगा।

उनके लिए यह पूर्णकालिक नौकरी है। और इसलिए यह कथन यहीं से आता है। प्रभु लेवी के गोत्र से कहते हैं, तुम्हें उनकी भूमि में कोई हिस्सा नहीं मिलेगा, न ही उनके बीच तुम्हारा कोई हिस्सा होगा।

मैं इस्राएलियों के बीच तुम्हारा हिस्सा और तुम्हारी संपत्ति हूँ। इसका मतलब यह है कि इस्राएलियों को दशमांश, प्रथम भेंट और उपहार परमेश्वर को लाने की जिम्मेदारी थी। इसका अधिकांश हिस्सा फल और सब्जियों के रूप में होता था और वे इसे पशु बलि के एक हिस्से के साथ लाते थे।

वे इसे परमेश्वर के लिए उपहार के रूप में पवित्रस्थान में लाते थे, और परमेश्वर इसे लेवी जनजाति के प्रतिनिधियों को सौंप देता था जो उस समय पवित्रस्थान में ऊँटी पर थे, और यही उनका भोजन होता था। लेकिन यह परमेश्वर से आया था। यह परमेश्वर से आया था।

कि यह भगवान के माध्यम से आया, लेकिन ऐसा इसलिए था क्योंकि वे उस पूजा के लिए जिम्मेदार थे जो उन्हें मिल रही थी। इसलिए, उनकी भूमि में कोई आवंटन नहीं है और कोई हिस्सा नहीं है। लेकिन मैं आपका हिस्सा हूँ।

मैं इस्राएलियों के बीच तुम्हारी संपत्ति हूँ। अब, वास्तव में, इसे एक आध्यात्मिक अर्थ दिया गया था, और हम भजन संहिता में पाते हैं कि इसे विश्वास की पुष्टि के रूप में लिया गया है, और साधारण विश्वासी इसे आध्यात्मिक रूप से खुद पर लागू करेंगे और कहेंगे, ठीक है, हाँ, मुझे ज़मीन मिल गई है। मुझे नौकरी मिल गई है।

मेरे पास पैसे आ रहे हैं, लेकिन अंदर से, यह सब भगवान पर निर्भर करता है। भगवान मेरी सहायता प्रणाली है, और मूल रूप से, यह सब भगवान का उपहार है, और इसलिए भगवान पर मेरी निर्भरता है, और मुझे इसे गंभीरता से लेना चाहिए, और यह एक बड़ी सांत्वना हो सकती है और उदाहरण के लिए, हम भजन 142 और श्लोक 5 में विलाप के दौरान पाते हैं मैं आपको पुकारता हूँ हे भगवान मैं कहता हूँ कि आप मेरी शरण हैं, जीवितों की भूमि में मेरा भाग है। मैं आप पर निर्भर हूँ, भगवान।

मैं आप पर निर्भर हूँ, और इसलिए मैं इस समय मदद के लिए आपकी ओर मुड़ रहा हूँ। यह बहुत ही आध्यात्मिक आश्वासन है, और यही बात यहाँ गुरु का दावा है। प्रभु मेरा भाग है। मैं ईश्वर पर निर्भर हूँ।

मैं परमेश्वर की भलाई पर निर्भर हूँ, और इसलिए, मैं उस पर आशा रखूँगा, और वह फिर से इस शब्द का उपयोग करता है: आशा। पद 18: प्रभु से मेरी सारी उम्मीदें खत्म हो गई हैं। वे पुरानी उम्मीदें खत्म हो गई थीं, लेकिन पद 21, लेकिन मैं इसे याद करता हूँ, और इसलिए, मुझे आशा है।

वह इसे श्लोक 24 के अंत में उठाता है। इसलिए, मुझे उससे उम्मीद है कि यह अंतिम संदर्भ अनावश्यक नहीं है। यह आशा है।

मेरी आशा ईश्वर-आधारित, धार्मिक और आध्यात्मिक है, और मैं यहीं खड़ा हूँ। ठीक है, और इसलिए हम इस मामले में एक निश्चित बिंदु पर आ गए हैं।

और इसलिए, हम इस मामले में एक निश्चित बिंदु पर आ गए हैं। हम इस गवाही के अंत तक पहुँच चुके हैं, वास्तव में, और पद 25 में, हालाँकि पद 40 तक मण्डली का उल्लेख नहीं किया गया है, यह उनसे बहुत बात कर रहा है, और यह एक तरह के उपदेश का रूप ले लेता है। लेकिन यह गवाही, जो वास्तव में पद 24 तक फैली हुई है, यह उस व्यक्तिगत गवाही को सामान्य बनाने और इसे सीधे मण्डली पर लागू करने की ओर ले जाती है।

यह सिर्फ मेरे लिए ही सच नहीं है; यह किसी भी विश्वासी के लिए सच है जिसे गुरु कहना चाहता है, और यह आपके लिए भी सच है, और यह कुछ ऐसा है जिसे आप खुद पर लागू कर सकते हैं। वह अपनी गवाही में यह स्पष्ट रूप से कह रहा था, लेकिन अब, जब वह इस पर मुड़ता है तो यह सीधे तौर पर होता है। और इसलिए, गवाही एक लक्ष्य तक पहुँचने का साधन है, और मण्डली ने अपने कान खड़े कर लिए होंगे, और उस गवाही में गुरु जो कह रहा था उसे सुनना सुरक्षित था।

और जब वह अपनी पीड़ा के बारे में बात करता था, तो वे स्पष्ट रूप से उसके साथ जुड़ जाते थे, और उम्मीद है कि, वे भी उस आश्चर्यजनक अंत को सुनते और सकारात्मक तरीके से बात करने में उसकी ईमानदारी को स्वीकार करते। उम्मीद है, वे भी आश्चर्य करना शुरू कर देते कि क्या यह उनके लिए सच हो सकता है। आखिरकार, उसने मानक इज़राइली धर्मशास्त्र के इन तत्वों की अपील की है, पद 6 में निर्गमन 34 को उकसाया है, और यह समझ में आता है।

और इसलिए, यह गवाही एक लक्ष्य तक पहुँचने का एक साधन है, और अपने आप में एक सामान्यीकरण तुरंत मण्डली का ध्यान आकर्षित नहीं कर सकता। वे उसे अपने अनुभव के बारे में बात करते हुए सुनने के लिए तैयार हैं। ओह, दिलचस्प है।

लेकिन अब, यह एक उपदेश की शुरुआत है जिसे वह 25 से आगे प्रस्तुत कर सकते हैं। और इसलिए, अब हम अध्याय के अगले भाग की ओर बढ़ रहे हैं, और उम्मीद है कि हम 25 से 33 तक हटाए गए श्लोक 33 तक पहुँच जाएंगे। यहां, वह कुछ सामान्य धार्मिक शिक्षा दे रहे हैं, और वह पिछले नकारात्मक, बुरे अनुभवों को एक अच्छी उम्मीद की संभावना के साथ एकीकृत कर रहे हैं।

और अब, जैसा कि मैंने कहा, मण्डली सीधे दृष्टि में है, भले ही वह उनका उल्लेख नहीं करता है। और वह उन्हें आपदा और संकट के अपने वर्तमान संकट से परे सोचने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। और वह एक तरह की धर्मोपदेश शैली का उपयोग करता है।

जब हम विलाप के साहित्यिक पूर्ववर्ती को देख रहे थे, तो हमने उल्लेख किया कि ज्ञान के भजन हैं जो उपदेशों की तरह ही पढ़े जाते हैं। और वे उपदेशात्मक भजन हैं, और वे स्पष्ट रूप से सिखाने के लिए हैं, उपदेश देने के लिए। और यही वह शैली है जिसे अब संरक्षक अपनाते हैं।

और ऐसे बहुत से ज्ञान के भजन हैं जो इस तरह से बोलते हैं। भजन 34, जिसका हमने अभी हवाला दिया, और फिर भजन 37, 49, 73, जिसका हमने हवाला दिया, और फिर भजन 92 और 112। और इनका ज्ञान साहित्य के साथ एक ढीला संबंध है।

अय्यूब, नीतिवचन और सभोपदेशक की पुस्तकें पेशेवर ज्ञान शिक्षकों द्वारा लिखी गई थीं। और यहाँ, ज्ञान शिक्षक नहीं लिख रहे हैं और बात कर रहे हैं, बल्कि पुजारी हैं। पुजारियों का दोहरा काम था।

पुजारियों को उपासना, उपासना के सभी विवरण और बलिदान से निपटना पड़ता था। लेकिन उन्हें शिक्षण से भी निपटना पड़ता था। वे इस्राएल के शिक्षक थे।

जैसा कि हमने निर्देश की कमी के अध्याय 2, 2.9 के दौरान उल्लेख किया था, मार्गदर्शन अब नहीं रहा। और मैंने कहा कि यह पुजारियों से निर्देश था कि यरूशलेम के पतन के बाद अब इसकी कमी थी। और इसलिए, यह पुरोहितीय निर्देश है, जिसके बारे में यहाँ बात की जा रही है, जो पेशेवर ज्ञान शिक्षकों की शैली पर निर्भर करता है, उसे उठाता है, और इसे व्यापक तरीके से उपयोग करता है।

वास्तव में, हमारे वर्तमान श्लोकों के सबसे निकट समानांतर, वास्तव में, भजन 34 है, जिसे हम अभी उद्धृत कर रहे थे। भजन 34 और श्लोक 11 से 22, वास्तव में, भजन की तरह ही ज्ञान हैं। और यह बहुत दिलचस्प है कि श्लोक 11 कहता है, आओ, हे बच्चों, मेरी बात सुनो, क्योंकि मैं तुम्हें प्रभु का भय मानना सिखाऊंगा।

और इसमें बच्चों या बेटों का शब्द इस्तेमाल किया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है बेटे। और इसी शैली में नीतिवचन इसका इस्तेमाल करता है, जिसमें छात्रों को बेटों के रूप में संबोधित किया जाता है। ज्ञान शिक्षक उन्हें निर्देश देने वाला पिता है।

और इसलिए, ज्ञान के विद्यार्थी के बारे में, ज्ञान के विद्यार्थी को ज्ञान के शिक्षक के बेटे के रूप में संबोधित किया जाएगा। भजन 34 की आयत 11 में भी इसी शैली का पालन किया गया है। आओ, हे बच्चों, मेरी बात सुनो।

वह इस ज्ञानपूर्ण शैली को अपना रहे हैं - एक तरह का ज्ञानपूर्ण सोच पर आधारित उपदेश। लेकिन इसमें एक बुनियादी अंतर है।

भजन 34 के कारण, हम परमेश्वर द्वारा स्वीकृति के लिए सामने के दरवाजे और पीछे के दरवाजे के बारे में बात कर रहे थे। विलाप को उस पिछले दरवाजे को अपनाना होगा और पीछे के दरवाजे से आना होगा, जहाँ संरक्षक और उम्मीद है कि मण्डली चिंतित है। लेकिन भजन 34 में, यह सामने के दरवाजे से आ रहा है, जैसे 1 यूहन्ना अध्याय 5 में। और हमने श्लोक 37 को उद्धृत किया जब धर्मी मदद के लिए पुकारते हैं।

लेकिन गुरु दोषी था, और वह अब धर्मी नहीं था, और मण्डली अब धर्मी नहीं थी। इसलिए, उन्हें पिछले दरवाजे से आना पड़ा। इसलिए, वहाँ कुछ आध्यात्मिक या धार्मिक सिद्धांत में वह अंतर है, जहाँ ईश्वर के प्रति दृष्टिकोण का संबंध है।

यह सब, ज़ाहिर है, पश्चाताप की आवश्यकता की ओर ले जाएगा। और यह सकारात्मक पक्ष पाप के स्वीकारोक्ति पर निर्भर करेगा। और विलाप 3 अंततः उस बिंदु पर आने वाला है।

लेकिन यह उस ओर बढ़ रहा है, और यह वादे और उम्मीद पैदा कर रहा है, जो आधार है और आगे बढ़ने के तरीके के रूप में आगे की ओर इशारा करता है, वह रास्ता जो पश्चाताप से हासिल होता है। श्लोक 25 कहता है कि प्रभु उन लोगों के लिए अच्छा है जो उसकी प्रतीक्षा करते हैं, उस आत्मा के लिए जो उसे खोजती है। और फिर श्लोक 26 कहता है कि यह अच्छा है कि व्यक्ति को प्रभु के उद्धार के लिए चुपचाप प्रतीक्षा करनी चाहिए।

श्लोक 27, जवानी में जूआ उठाना अच्छा है। और शब्द अच्छा, यह बहुत ही उत्तेजक शब्द है। हे भगवान, मण्डली इसे कैसे स्वीकार कर सकती है? और गुरु इसे कैसे कह सकते हैं? और यह उसके द्वारा अभी श्लोक 17 में कही गई बात के विपरीत है।

मैं भूल गया हूँ कि खुशी, समृद्धि और सचमुच अच्छाई क्या होती है। वह श्लोक 17 में अच्छाई शब्द के नकारात्मक उपयोग के साथ दृश्य प्रस्तुत करता है। बाहरी तौर पर, अच्छाई अतीत की बात थी।

लेकिन वह उससे आगे जाना चाहता है और कहता है, अभी भी, आगे बढ़ने का एक रास्ता है जिसमें भलाई शामिल है। और वह सबसे पहले धर्मशास्त्रीय रूप से बोलता है, और यह भलाई की प्रकृति का वर्णन करता है। भजनों के कुछ संदर्भों में, दृढ़ प्रेम और वफ़ादारी को ईश्वर के अच्छे होने से जोड़ा गया था।

और इसलिए यहाँ, प्रभु उन लोगों के लिए अच्छा है जो उसका इंतज़ार करते हैं, उस आत्मा के लिए जो उसे खोजती है। इंतज़ार करना आशा का पर्याय है। किसी को यह बुनियादी आशा, यह नई उम्मीद रखने की ज़रूरत है कि हम जो कुछ भी अभी कर रहे हैं उससे परे एक सकारात्मक भविष्य है।

प्रभु उन लोगों के लिए अच्छा है जो उसका इंतज़ार करते हैं, इसलिए यह आशीर्वाद की संभावना है। लेकिन हमें परमेश्वर का इंतज़ार करना चाहिए, परमेश्वर पर आशा रखनी चाहिए, यह नई सकारात्मक उम्मीद रखनी चाहिए और इसे साझा करना चाहिए।

लेकिन यह उस आत्मा के साथ और भी बढ़ जाता है जो उसे खोजती है। और यहाँ, यह पहला संकेत है, जो पश्चाताप की प्रार्थना के लिए आह्वान की ओर ले जाएगा, कि हमें कुछ करना है। और हमें ईश्वर की खोज करनी है।

दूसरे शब्दों में, हमें ईश्वर से प्रार्थना करनी होगी। यह खोज का हिस्सा है। यह प्रतीक्षा का हिस्सा है, उस आशा की प्रतीक्षा करने का हिस्सा है, एक बार फिर ईश्वर से जुड़ने का हिस्सा है।

और गुरु के लिए, इसका मतलब है प्रार्थना में ईश्वर से जुड़ना। इसलिए, यह माना जाता है कि ईश्वर के पास सकारात्मक उद्देश्य है। चूँकि वह अच्छा है, इसलिए उस योग्य दंड से परे भी एक सकारात्मक उद्देश्य है।

हम श्लोक 38 पर नज़र डाल सकते हैं, जो परमेश्वर के समग्र उद्देश्यों को सारांशित करता है। गुरु कह रहे हैं कि परमेश्वर के पास भविष्य के अच्छे उद्देश्य हैं, लेकिन वह श्लोक 28 और श्लोक 38 में इसे संतुलित करता है। क्या यह परमप्रधान के पर्वत से नहीं है कि अच्छाई और बुराई आती है? NRSV हमें इस बिंदु पर निराश करता है।

अगर हम नए अंतर्राष्ट्रीय संस्करण को देखें, तो हमें श्लोक 38 में बेहतर अनुवाद मिलेगा। क्या यह सर्वोच्च के मुख से नहीं है कि विपत्तियाँ और अच्छी चीज़ें दोनों आती हैं? और शाब्दिक रूप से, यह बुरी चीज़ों और अच्छी चीज़ों के बीच का अंतर है। और वहाँ एक निश्चित प्रगति है।

और इसमें NIV की तरह ही प्रगति होनी चाहिए। यही उचित क्रम है। पहले बुरा और फिर अच्छा।

यह निश्चित रूप से गुरु की स्थिति और उसकी गवाही से मेल खाता है: वह पापों के लिए दोषी है और दंडित है, लेकिन अपने संकट में भी आगे की ओर देखता है। और यह मण्डली के लिए भी सच है, क्योंकि वे स्वयं संकट की इस गंभीर स्थिति में थे, सांप्रदायिक संकट। और उनसे आग्रह किया जाता है कि वे इससे आगे देखें, सकारात्मक भविष्य की ओर देखें।

और इसलिए, हमें उस क्रम की आवश्यकता है। तो, NRSV में क्या गलत हुआ? क्या यह सर्वोच्च के मुख से नहीं है, कि अच्छा और बुरा आता है? ठीक है, हिब्रू में बुरा और अच्छा कहा गया है, लेकिन अनुवादक ने खुद से सोचा, यह अंग्रेजी में मुहावरेदार नहीं है। हम बुरा और अच्छा नहीं कहते, हम अच्छा और बुरा कहते हैं।

तो, चलो इसे शैलीगत रूप से अच्छा बनाते हैं। लेकिन इसने अर्थ को बर्बाद कर दिया है। और कहीं भी यह अच्छा और बुरा नहीं है। यह बुरा और अच्छा है।

यही वह क्रम है जिसकी आवश्यकता है। और इस तरह का समग्र उद्देश्य, बुरे से परे, अच्छाई है। और यही बात श्लोक 25, 26 और 27 कह रहे हैं, इस उत्तेजक शब्द, अच्छे को भविष्य के लिए एक उम्मीद के रूप में पेश करके, उन सभी दुखद उम्मीदों की जगह ले रहा है जो उनके अनुभव में गायब हो गई थीं।

और इसलिए, उस अपेक्षा का एक मानवीय पक्ष भी है। हमें ईश्वर से प्रार्थना करके उससे संबंध बनाने की आवश्यकता है। और यही वह बिंदु है जिस पर उपदेशक श्लोक 45 में पहुंचने वाले हैं।

लेकिन वह भलाई के इस विचार का अनुसरण करता है। और वह ईश्वर के प्रति समर्पण की बात करता है। यह अच्छा है कि व्यक्ति को प्रभु के उद्धार के लिए शांति से प्रतीक्षा करनी चाहिए।

वह उस धन्य शब्द मोक्ष का उपयोग करता है, जो पुराने नियम में एक अस्तित्वगत चीज़ है जिसका अर्थ है संकट से मुक्ति, बुरे, बुरे अनुभव से बचाव। और पुराने नियम में और विशेष रूप से भजन संहिता में अक्सर यही मोक्ष है। और इसलिए, वह इस अनुग्रह से भरे शब्द, एक नए अनुग्रह से भरे शब्द, मोक्ष का उपयोग करता है, और इसे परमेश्वर से जोड़ता है।



अब वह भजन की भाषा को अपनाता है: मुक्ति। लेकिन हमें चुपचाप प्रतीक्षा करनी चाहिए, परमेश्वर के प्रति समर्पित होना चाहिए, और जो स्वीकार किया जाना चाहिए उसे स्वीकार करना चाहिए। उसे एहसास हुआ कि सज़ा ज़रूरी थी और यह अच्छा है क्योंकि उसे एहसास हुआ कि सज़ा उचित और न्यायसंगत थी।

और इसलिए, किसी को इस दृष्टिकोण पर आना ही होगा। और इसलिए प्रोत्साहित रहें कि यदि आप ऐसा करते हैं, तो अंततः, आप ईश्वर की बचाव सहायता से संकट से बचाए जाएंगे। और श्लोक 27, आपके लिए, युवावस्था में जूआ उठाना अच्छा है।

उसने उस जूए के बारे में बात की थी। उसने अध्याय 1, श्लोक 14 में उल्लेख किया, ठीक है, यह सिय्योन बोल रहा था, है न? मेरे अपराधों को उसके हाथ से एक जूए में बाँध दिया गया था। वे एक साथ बंधे हुए थे।

वे मेरी गर्दन पर बोझ डालते हैं, मेरी ताकत को खत्म करते हैं। और यहाँ उस अनुभव को याद करते हुए कहा गया है, वह आपका अनुभव था, मण्डली, है न? वह आपका अनुभव था। और आपके लिए उस जूए को सहना अच्छा था क्योंकि, फिर से, यह उचित और न्यायसंगत था कि आपको ऐसा करना चाहिए क्योंकि वास्तव में आपको अपने पापों के लिए दंडित किया जा रहा था।

और इसलिए, यह बहुत ज़रूरी था, और आप इसके हकदार थे। और 1:14 में, पाप के लिए दंडित होने के रूप के रूप में, जूए को एक आवश्यक बोझ के रूप में सहना पड़ता है। वह कहते हैं कि युवावस्था में भी, युवावस्था में भी।

युवा, युवा लोग, अक्सर इतने परिपक्व नहीं होते कि वे जो चाहते हैं उसे स्वीकार कर सकें, और वे इसके खिलाफ़ प्रतिक्रिया करते हैं। लेकिन यह अभी भी ज़रूरी है, यहाँ तक कि मण्डली में युवा लोगों के लिए भी, जो हो रहा है उसे स्वीकार करना और उसका सही अर्थ निकालना। अब, 27 से 30, अगर आप इसे पूरा पढ़ें, तो यह सब इस बात से संचालित होता है कि यह अच्छा है।

यह सिर्फ़ 27 ही नहीं है जो 26वें पद के बाद अच्छा है, बल्कि 28, 29 और 30 भी वाक्यविन्यास की दृष्टि से एक साथ फिट बैठते हैं। पहली बात तो यह है कि युवावस्था में जूआ उठाना अच्छा है, हाँ। और फिर 28, दूसरी बात यह कि जब प्रभु ने इसे लगाया है तो चुपचाप अकेले बैठना अच्छा है, हाँ।

तीसरा, अपना मुंह धूल में मिला लेना, फिर भी उम्मीद की किरण हो सकती है। और फिर चौथा, मारने वाले के सामने अपना गाल रख देना और अपमान से भर जाना। यह सब उस भयावह अनुभव के बारे में है जो मण्डली ने अनुभव किया था।

और यह विचार बहुत हद तक यही है कि, हाँ, यह ज़रूरी था। यह ज़रूरी था। और इसलिए, हमें यह स्वीकार करना होगा कि यह ऐसा ही है।

और श्लोक 28 में, दुःख की चुप्पी को स्वीकार करने के लिए, श्लोक 39 द्वारा इसका विरोध किया जाएगा। जो कोई साँस लेता है, उसे अपने पापों की सज़ा के बारे में शिकायत क्यों करनी चाहिए? आपको इसे स्वीकार करना होगा, हाँ, चुपचाप। और हम श्लोक 39 को देखेंगे कि यह वास्तव में क्या कहता है।

लेकिन हम कहते हैं कि इस समय यह इसके विपरीत है, जिसे श्लोक 39 में अकेले चुपचाप बैठने के लिए कहा गया है। और फिर अपने मुँह को धूल में मिलाना, जीवन की निम्न गुणवत्ता को स्वीकार करना, और मारने वाले के सामने अपना गाल देना, अपमान से भर जाना, यहाँ तक कि उत्पीड़न और अपमान को भी इस समय ईश्वर की इच्छा के हिस्से के रूप में स्वीकार करना, लेकिन स्पष्ट रूप से हमेशा के लिए नहीं। हमेशा के लिए नहीं।

इसे स्वीकार करो, इसे स्वीकार करो, इसे स्वीकार करो। कुछ ऐसा है जो हमने नहीं पढ़ा। श्लोक 29 का दूसरा भाग, अभी भी आशा हो सकती है।

यह आशा पर वापस आता है, लेकिन अब यह आशा को योग्य बनाता है। आशा अभी भी हो सकती है। ओह, ओह, आशा अभी भी हो सकती है।

और हम सोच सकते हैं कि यह एक तरह की गिरावट है। इस उम्मीद के साथ एक आकस्मिकता जुड़ी हुई है। हो सकता है कि ऐसा न हो, हो सकता है कि ऐसा न हो।

और हम इस बारे में चिंतित हो सकते हैं। इसलिए, हमें इस बारे में बहुत सावधानी से सोचने की ज़रूरत है, अभी भी उम्मीद हो सकती है। अधिक शाब्दिक रूप से, शायद उम्मीद होगी।

शायद उम्मीद होगी। एक बात जो हमें समझनी होगी वह यह है कि बाइबल में, जब पश्चाताप के बारे में बात की जाती है, तो इसे अक्सर इस दिव्य आकस्मिकता से जोड़ा जाता है और शायद, यह हो सकता है, या कौन जानता है। मुझे ये पाठ पढ़ने दें।

आमोस 5:15, बुराई से घृणा करो और भलाई को देखो और उससे प्रेम करो। हो सकता है कि प्रभु कृपालु हो। इसलिए, यहाँ बदलाव ज़रूरी है और यहाँ वास्तव में पश्चाताप का आह्वान है।

हो सकता है कि प्रभु कृपालु हो। योएल अध्याय 2, श्लोक 13 और 14, प्रभु के पास लौट आओ। कौन जानता है कि वह फिरकर पछताएगा या नहीं।

योना अध्याय 3, श्लोक 8 और 9, सभी अपने बुरे मार्गों से फिरेंगे, यह नीनवे के राजा की अपनी प्रजा को आज्ञा थी। कौन जानता है, शायद परमेश्वर पछताए और अपना मन बदल ले। हो सकता है कि वह अपने भयंकर क्रोध से फिर जाए ताकि हम नाश न हों।

यह पुराना नियम है। नया नियम सुनो। पतरस जादूगर शमौन से बात कर रहा है।

अपनी इस दुष्टता का पश्चाताप करो और प्रभु से प्रार्थना करो कि यदि संभव हो तो तुम्हारे हृदय की भावनाएँ तुम्हें क्षमा कर दी जाएँ। यह पुराने नियम के उन ग्रंथों में शायद और कौन जानता है

के अनुरूप है। और फिर 2 तीमुथियुस 2:25, तीमुथियुस को विरोधियों को नम्रता से सुधारने की आवश्यकता है।

भगवान शायद यह आशीर्वाद दें कि वे पश्चात्ताप करें और सत्य को जानें। मैंने कभी किसी उपदेशक को पश्चात्ताप की आवश्यकता के संदर्भ में इस शब्द का प्रयोग करते नहीं सुना, लेकिन यह पुराने और नए शास्त्रों में मौजूद है। तो, हमें इसका क्या मतलब निकालना चाहिए? खैर, यहाँ तीन पहलू हैं जिन्हें हमें ध्यान में रखना चाहिए।

सबसे पहले, परमेश्वर की संप्रभुता को ध्यान में रखें। यह संप्रभु परमेश्वर पर निर्भर करता है कि आपकी परिस्थितियों में सकारात्मक बदलाव कब या क्या होगा। यही बात गुरु कहना चाहते हैं।

हम इसे अधिकार के रूप में दावा नहीं कर सकते। हमारे नियंत्रण से परे एक दैवीय कारक है। हम इसकी मांग नहीं कर सकते। भगवान कोई स्लॉट मशीन नहीं है।

आप सही सिक्के डालते हैं, और देखते ही देखते चॉकलेट बार बाहर आ जाती है। हम जानते हैं कि ऐसा होने वाला है। ऐसा होना ही चाहिए।

अगर ऐसा नहीं होता है तो हम प्रबंधन से शिकायत करते हैं। नहीं, ऐसा नहीं है। यह ईश्वरीय संप्रभुता है।

अंत में, यह ईश्वर पर निर्भर है। और अध्याय पाँच इसी बिंदु पर वापस आने वाला है। कुछ बात ध्यान में रखने योग्य है, ईश्वरीय संप्रभुता की यह धार्मिक चेतावनी।

तो यह एक बात है जिसे ध्यान में रखना चाहिए। दूसरी बात जो हम पहले ही देख चुके हैं, जिसे हम फॉर्म-क्रिटिकल एसोसिएशन कहते हैं, वह है बोलने का एक प्रकार। जब आप पश्चात्ताप के बारे में बात करते हैं, तो आप अक्सर इसे इस योग्यता से जोड़ते हैं।

पुराने और नए नियम के सभी पाठों को पढ़ा। और यह सच है कि यह इस विशेष संदर्भ में नहीं है। अभी भी उम्मीद हो सकती है।

यह तुरंत पश्चात्ताप के बारे में बात नहीं कर रहा है, लेकिन यह पश्चात्ताप की आवश्यकता की ओर बढ़ रहा है। और श्लोक 40, आइए हम प्रभु के पास लौटें। यहीं पर पाठ आगे बढ़ रहा है।

और इसलिए, शायद आपको इसकी ज़रूरत है। हो सकता है। अभी भी उम्मीद हो सकती है। और इसलिए, यह पश्चात्ताप की तैयारी है।

और इसलिए, यह उन अन्य ग्रंथों के साथ बहुत अच्छी तरह से फिट बैठता है। लेकिन फिर भी, इसमें एक अलंकारिक शक्ति है। और इसका उपयोग आंशिक रूप से एक प्रेरक उपकरण के रूप में किया जाता है।

यह एक ऐसा मौका है जो लेने लायक है। मैं इसकी गारंटी नहीं दे सकता। यह एक ऐसा मौका है जो लेने लायक है।

यह आपके पास एकमात्र विकल्प है। और अगर मैं आपकी जगह होता तो मुझे इसे लेना चाहिए था और देखना चाहिए कि यह आपके लिए काम करता है या नहीं। और इसलिए, हम यहाँ हैं।

अगर आप चाहें तो इस जोखिम को उठाने का साहस करें और देखें कि यह आपको कहां ले जाता है। और उम्मीद है कि यह आपको एक शानदार दिशा में ले जाएगा। और इसलिए, यहाँ यह चुनौती है।

अभी भी आशा हो सकती है। और हमें इसे गंभीरता से लेने की ज़रूरत है। हम आयत 31 से 33 तक आते हैं, जो शब्द के लिए से शुरू होती है।

और वास्तव में, यह श्लोक 25 से 27 की अच्छाई को समझा रहा है। हम कह सकते हैं कि 25 से 30। यह अच्छाई क्या है? यह किस पर आधारित है? आप कैसे कह सकते हैं कि ये अच्छी चीजें होने जा रही हैं? और आप कैसे कह सकते हैं कि प्रभु अच्छे हैं? आपका इससे क्या मतलब है? और इसलिए, इन निश्चित मानवीय तरीकों से प्रतिक्रिया करना अच्छा क्यों है? और यह कैसे है कि परमेश्वर अच्छे हैं, जैसा कि श्लोक 25 में कहा गया है? और पहली बात जो हमने देखी है वह यह है कि आपको बहुत सारे नकारात्मक शब्द मिलते हैं जो यहाँ 31 से 33 में उलट दिए गए हैं।

प्रभु हमेशा के लिए अस्वीकार नहीं करेंगे। हालाँकि वह दुःख का कारण बनता है, वह अपने दृढ़ प्रेम की प्रचुरता के अनुसार दया करेगा, क्योंकि वह स्वेच्छा से किसी को पीड़ित या दुखी नहीं करता है। और इसलिए, उस नकारात्मकता, नकारात्मकता की उस श्रृंखला के विरुद्ध दृश्य पर सकारात्मकता आ रही है।

और पद 31 में हमेशा के लिए शब्द, वह हमेशा के लिए अस्वीकार नहीं करेगा। यह कह रहा है कि वर्तमान परिस्थितियाँ अस्थायी हैं। परमेश्वर की ओर से अस्थायी या वर्तमान दंड को ऐसे ही स्वीकार किया जाता है, लेकिन यह एक अस्थायी स्थिति है।

अध्याय 3 में पहले भी परमेश्वर द्वारा अस्वीकार किए जाने का विचार हमारे मन में आया था, और अब हम फिर से अनुत्तरित प्रार्थना के संदर्भ में ऐसा ही विचार करेंगे। श्लोक 8 में, यद्यपि मैं मदद के लिए पुकारता हूँ और रोता हूँ, वह मेरी प्रार्थना को बंद कर देता है। मुझे लगता है कि परमेश्वर ने मुझे अस्वीकार कर दिया है।

और फिर अध्याय 3 की आयत 44 में, आपने खुद को बादल से लपेट लिया है ताकि कोई भी प्रार्थना आपके पास से न गुजर सके। और यह भगवान की ओर से क्षमा की कमी का उल्लेख है। लेकिन यह अस्वीकृति हमेशा के लिए नहीं रहने वाली है।

वास्तव में यह अस्थायी है। और प्रार्थना का उत्तर देने में देरी करना सज़ा का हिस्सा था। प्रार्थना का उत्तर न देना सज़ा का हिस्सा था जिसे आपको स्वीकार करना होगा।

लेकिन यह आपके साथ परमेश्वर के भविष्य के व्यवहार का संकेत नहीं है। वह इस शब्द का उपयोग दुःख और शोक का वर्णन करने के लिए करता है। और यह एक ऐसा शब्द है जिसे वह पहले की प्रार्थना-पद्धति से लेता है।

पद 5 में, प्रभु ने हमें कष्ट दिया है। यह वही इब्रानी शब्द है। प्रभु ने हमें बहुत से अपराधों से पीड़ित किया है।

और फिर सिय्योन ने 1:12 में इसे उठाया, वह दुःख जो प्रभु ने अपने भयंकर क्रोध के दिन दिया था। वही इब्रानी शब्द जो हमें यहाँ दो बार मिलता है, उसका अनुवाद दुःख पहुँचाने और शोक करने के लिए किया जाता है। और इसलिए, यह एक क्रिया को उठा रहा है जो 586 में समाप्त होने वाली इस पूरी तबाही से जुड़ी हुई है।

और इसलिए, इसके विपरीत, आपके पास करुणा है। और इसके विपरीत, आपके पास परमेश्वर के दृढ़ प्रेम की प्रचुरता है। करुणा, निर्गमन 34 पद 6 फिर से।

और निर्गमन 34 की आयत 6, कुछ ऐसा जो हमने पहले नहीं कहा था, उसके अटल प्रेम की प्रचुरता। प्रचुरता। और आयत 22 और 23 में, जहाँ निर्गमन 34 और आयत 6 का बहुत कुछ उद्धृत किया गया था, वास्तव में, आपके पास बहुतायत शब्द नहीं था।

लेकिन निर्गमन का 34.6 क्या कहता है? प्रभु अटल प्रेम से भरपूर है। और इसलिए, पश्चाताप करने वाले इस्राएल के लिए परमेश्वर के साथ फिर से शुरुआत करने के लिए रखी गई इस धार्मिक नींव पर वापस आना है।

और फिर, श्लोक 33 में, वह स्वेच्छा से किसी को कष्ट या दुःख नहीं देता। यह एक दिलचस्प अभिव्यक्ति है, स्वेच्छा से। यह एक अच्छा अनुवाद है, लेकिन शाब्दिक नहीं है।

लेकिन सचमुच, अपने दिल से। परमेश्वर अपने दिल से किसी को भी कष्ट या दुःख नहीं देता। और यह कहना कि परमेश्वर के लिए ऐसा करना कोई स्वाभाविक बात नहीं है।

यह हमें उस समय की याद दिलाता है जब हम ईश्वर के क्रोध के बारे में बात कर रहे थे। यह एक ऐसी चीज है जो एक आवश्यक घटना के रूप में सामने आती है, लेकिन यह ईश्वर का स्वाभाविक गुण नहीं है। और इसलिए, दंड, दंड देने की यह सारी बातें, कभी-कभी ईश्वर को ऐसा करना पड़ता है।

लेकिन यह करुणा और दृढ़ प्रेम है। ये ईश्वर के नियमित गुण हैं। और हम उन्हें अनुभव करने के लिए वापस लौटने की आशा कर सकते हैं।

इसलिए, परमेश्वर इसलिए कष्ट नहीं देता क्योंकि वह चाहता है, बल्कि इसलिए देता है क्योंकि उसे न्याय और निष्पक्षता के लिए ऐसा करना पड़ता है। लेकिन उसका दिल कहीं और है। यह वह नहीं है जो वह करना चाहता है।

यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है। करुणा और दृढ़ प्रेम दिखाना। लेकिन अभी तक, वह ऐसा करने में सक्षम नहीं है।

लेकिन वह खुद में ऐसा व्यक्ति नहीं है। यह यहोवा का स्वभाव नहीं है, हालाँकि कभी-कभी यह ज़रूरी हो जाता है। लेकिन इसके बजाय, करुणा और दृढ़ प्रेम के संदर्भ में सोचें।

यहीं आपका भविष्य निहित है। और इसलिए यहाँ फिर से, यह अपेक्षाओं के इस नए सेट, धार्मिक अपेक्षाओं का हिस्सा है। और परमेश्वर के साथ वाचा की संगति में एक राष्ट्र इससे बेहतर क्या उम्मीद कर सकता है या गंभीरता से ले सकता है? और, बेशक, यह सब स्वीकृति के उस मानवीय चरण और पश्चाताप के उस मानवीय चरण, वास्तव में, और अपने स्वयं के पाप के बारे में परमेश्वर के विचारों को साझा करने का मार्ग प्रशस्त कर रहा है।

और फिर इस करुणा और इस अटल प्रेम का शुभारंभ और उन्मुक्ति हो सकती है। अगली बार हम श्लोक 34 से 51 तक देखेंगे।

अगली बार हम श्लोक 34 से 51 तक देखेंगे।

यह डॉ. लेस्ली एलन द्वारा विलाप की पुस्तक पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 8, विलाप 3:23-33 है।